

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 22, यीशु की मृत्यु, भाग 1

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 22, यीशु की मृत्यु, भाग 1 है।

हमारे पिछले भाग में, हमने मसीह के व्यक्तित्व और मसीह से संबंधित न्यू टेस्टामेंट में प्रमुख बाइबिल-धर्मशास्त्रीय विषयों को देखना शुरू किया।

संक्षेप में कहें तो, यदि हम बाइबिल धर्मशास्त्र में मसीह के महत्व को नए नियम धर्मशास्त्र में संक्षेप में प्रस्तुत कर सकें, तो यीशु मसीह दुनिया में परमेश्वर की मुक्तिदायी गतिविधि का चरमोत्कर्ष है। इसलिए कि मुक्ति लाने के लिए परमेश्वर के सभी उद्देश्य, अपने लोगों के लिए परमेश्वर के सभी उद्देश्य, मुक्ति को पूरा करने और उत्पत्ति 1 और 2 में वापस जाने वाले अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर जो कुछ भी करना चाहता है, वह सब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपना चरमोत्कर्ष और पूर्णता पाता है। इसलिए, मसीह परमेश्वर की गतिविधि का शिखर है, दुनिया में परमेश्वर के ऐतिहासिक और मुक्तिदायी कार्य का।

अब, मैं जो करना चाहता हूँ वह अधिक विशिष्ट रूप से देखना है, हालाँकि ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें हम मसीह के अपने कार्य और वास्तव में वह क्या पूरा करता है, के संबंध में देख सकते हैं, मैं मुख्य रूप से अगले कुछ सत्रों में यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जो मसीह के संकेत के रूप में है, मसीह छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्यों को पूरा करने में क्या पूरा करता है। मैं मसीह की मृत्यु को देखकर और पुराने नियम के प्रकाश में इसके महत्व पर विचार करके शुरू करना चाहता हूँ, लेकिन नए नियम की शिक्षाओं के प्रकाश में, नया नियम इस बात पर जोर देता है कि मसीह की मृत्यु क्या हासिल करती है, मसीह क्यों मरा, हमें इसे कैसे समझना चाहिए, और फिर से नया नियम किस बात पर जोर देता है। अब, जैसा कि हम देखेंगे, यीशु की मृत्यु से बहुत कुछ जुड़ा हुआ है।

हर जगह सिर्फ़ संदर्भ ही संदर्भ हैं। लगभग हर मोड़ पर, नए नियम के लेखक यीशु मसीह की मृत्यु और उसके महत्व का उल्लेख करते हैं या उसे मानते हैं। इसलिए, हम यीशु की मृत्यु के सभी पहलुओं को समझने की उम्मीद नहीं कर सकते।

हम यीशु की मृत्यु का उल्लेख करने वाली हर पुस्तक और हर पाठ में प्रत्येक लेखक के बारे में विस्तार से जाने की उम्मीद नहीं कर सकते। हम यीशु की मृत्यु के अर्थ की सभी रूपरेखाओं का पता लगाने की उम्मीद नहीं कर सकते, लेकिन एक बार फिर, हमें उन बातों पर ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है जो मुझे लगता है कि नए नियम में यीशु की मृत्यु के महत्व की सबसे महत्वपूर्ण और स्पष्ट विशेषताएं और अभिव्यक्तियाँ हैं। अन्य धार्मिक विषयों की तरह, जिन पर हमने विचार किया है, हम विहित क्रम के दृष्टिकोण से यीशु की मृत्यु पर विचार करेंगे।

इसलिए, हम सुसमाचारों को देखेंगे और प्रेरितों के काम, पॉलिन साहित्य, अन्य नए नियम के ग्रंथों और प्रकाशितवाक्य को भी देखेंगे। लेकिन बाद के अधिकांश, जब हम सुसमाचारों और प्रेरितों के काम से बाहर निकलते हैं, जब हम बाद के ग्रंथों से निपटते हैं, तो हम मुख्य रूप से पुस्तकों के माध्यम से खुद को विहित रूप से आगे बढ़ाने के बजाय, उन प्रमुख विषयों के संदर्भ में पुस्तकों को देखेंगे जिन पर वे जोर देते हैं। इसलिए, हम सुसमाचारों और प्रेरितों के काम को देखेंगे और फिर पॉल के पत्रों और नए नियम के बाकी हिस्सों पर ध्यान केंद्रित करना शुरू करेंगे, नए नियम के बाकी हिस्सों में मसीह की मृत्यु से जुड़े कुछ प्रमुख विषयों या उद्देश्यों को देखेंगे।

तो, शुरूआती बिंदु सुसमाचारों से ही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी सुसमाचार मसीह की मृत्यु और उसके बाद होने वाली पीड़ा के विस्तृत विवरण के साथ समाप्त होते हैं, जिसमें वह भी शामिल है, साथ ही पुनरुत्थान भी, जिसे हम बाद में देखेंगे। लेकिन वे सभी काफी लंबे समय के साथ समाप्त होते हैं, जो यीशु के जीवन के अन्य पहलुओं, विशेष रूप से मार्क के सुसमाचार के लिए समर्पित समय और स्थान की मात्रा के अनुपात में लगभग असंगत है।

नए नियम के ग्रंथ उस संक्षिप्त समय अवधि से निपटते हैं, जो यीशु मसीह के परीक्षण और पीड़ा और मृत्यु के इर्द-गिर्द केंद्रित है। वास्तव में, जैसा कि कई नए नियम के धर्मशास्त्री याद करना पसंद करते हैं, सुसमाचारों को अक्सर, विशेष रूप से मार्क के सुसमाचार को, एक विस्तारित परिचय के साथ क्रूस पर चढ़ने की कथा के रूप में वर्णित किया गया है। लेकिन वे सभी यीशु मसीह की मृत्यु के विवरण में चरमोत्कर्ष की ओर ले जाते हैं।

हालाँकि, मुझे लगता है कि यह लेखकों, शुरुआती चर्च और शुरुआती ईसाइयों और ईश्वर के लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है। सुसमाचारों में यीशु द्वारा वास्तव में अपनी मृत्यु की आशंका और उसके लिए नेतृत्व करने के कथन भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, मत्ती अध्याय 16 में, पतरस द्वारा मसीह के कबूलनामे के संदर्भ में, मत्ती अध्याय 16 और श्लोक 21।

इसलिए, यीशु ने पतरस से पूछा, तुम मुझे कौन कहते हो? पतरस ने कबूल किया कि वह मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र। फिर, उसके बाद, श्लोक 21 में, यीशु आगे कहते हैं और कहते हैं, उस समय से, यीशु ने अपने शिष्यों को समझाना शुरू किया कि उसे यरूशलेम जाना चाहिए और बड़ों, मुख्य पुजारियों और शास्त्रियों के हाथों बहुत कुछ सहना चाहिए और उसे मार दिया जाना चाहिए और तीसरे दिन जीवित किया जाना चाहिए। और फिर पतरस ने कहा, कभी नहीं।

जाहिर है, वह पुनर्जीवित होने वाले भाग को नहीं सुन रहा था। लेकिन फिर से, पतरस की समस्या का एक हिस्सा यह था कि, कई लोगों की तरह, वह मसीहा को समझ नहीं पाया। यीशु को मसीहा, परमेश्वर का पुत्र मानने के बाद, और फिर इस तथ्य के साथ कि यीशु को मरना होगा, यह ऐसी श्रेणी नहीं थी जिसे पतरस ने अपने दिमाग में रखा था कि वह इसे फिट कर सके।

फिर हम मार्क अध्याय 8, श्लोक 31 में भी यही बात पाते हैं। बाद में, मार्क, अध्याय 10, श्लोक 45 में, यीशु कहते हैं, मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने के लिए नहीं आया, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए अपने प्राण छुड़ौती के रूप में देने आया है। हम उस पाठ को कुछ विषयों के संबंध में भी देखेंगे।

इसलिए सुसमाचारों में यीशु के बारे में बहुत पहले से ही बताया गया है, उनके कुछ सुसमाचारों में, उनके दुख और मृत्यु का अनुमान लगाया गया है जिसका उन्हें सामना करना था। लेकिन इसके अलावा, सभी सुसमाचारों में यीशु की क्रूस पर मृत्यु और उनके दुख के बारे में एक लंबा विवरण दिया गया है, जो इसके महत्व को दर्शाता है। हालाँकि, जो बात दिलचस्प है वह यह है कि सुसमाचारों में यीशु की मृत्यु के महत्व के बारे में बहुत विस्तार से नहीं बताया गया है।

इसका एक बड़ा कारण शायद सुसमाचार की साहित्यिक शैली है। वे कथात्मक हैं, वे उन घटनाओं का वर्णन करते हैं जिन पर वे अधिक ध्यान नहीं देते या उन्हें खोलते नहीं और यीशु की मृत्यु के महत्व का विस्तार से वर्णन करते हैं। हालाँकि, कथात्मक रूप में, वे केवल वही दर्ज करते हैं जो हुआ था।

इसलिए, सुसमाचारों में यीशु की मृत्यु के सटीक महत्व के बारे में विस्तार से नहीं बताया गया है। लेकिन शुरू से ही, सुसमाचारों में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यीशु का इरादा, और सुसमाचारों को समग्र रूप से देखें, तो यीशु का पृथ्वी पर आने का इरादा अंततः क्रूस पर चढ़ना और मरना था। इसलिए, यीशु मसीह की मृत्यु अपने लोगों की ओर से परमेश्वर के उद्धार कार्य में एक महत्वपूर्ण विशेषता है और बन जाती है।

प्रारंभिक चर्चों में, जिसमें नए नियम के बाकी भाग भी शामिल हैं, मसीह के पृथ्वी पर आने के उद्देश्य के बारे में समझ थी। हालाँकि, सुसमाचारों में कभी-कभी क्रूस पर यीशु की मृत्यु के महत्व के बारे में कई संकेत मिलते हैं। उदाहरण के लिए, मत्ती 1 और पद 21 उस दिलचस्प कथन से शुरू होता है जब यूसुफ को बताया जाता है कि उसकी पत्नी मरियम के होने वाले बच्चे का नाम क्या रखना है।

उसे उसका नाम यीशु रखने को कहा गया क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। इसलिए, हालाँकि मैथ्यू इस बिंदु पर हमें यह नहीं बताता कि यह कैसे होने जा रहा है, यह केवल कथा के खुलने पर ही स्पष्ट होता है; यह स्पष्ट है कि यीशु के आने का प्राथमिक उद्देश्य अपने लोगों को उनके पापों से बचाना है। संभवतः, इस स्तर पर, यह मसीह द्वारा इस्राएल को उन पापों से बचाने का संदर्भ है जिनके कारण उन्हें निर्वासन में जाना पड़ा।

इसलिए, यदि मत्ती यह मानता है कि इस्राएल अभी भी अपने पाप के कारण निर्वासन में है, तो यीशु ही वह व्यक्ति है जो आएगा और उन्हें उस पाप से बचाएगा। अब, एक बार फिर, हम देखेंगे कि कथा किस प्रकार सामने आती है और यह कैसे घटित होता है। मत्ती अध्याय 27 और पद 51 में, क्रूस पर यीशु की मृत्यु के संदर्भ में, हम इस रोचक विवरण को पढ़ते हैं कि क्या हुआ।

पद 50: और जब यीशु ने फिर से ऊँची आवाज़ में पुकारा, तो उसने अपने प्राण त्याग दिए। और फिर, पद 51 में, उस क्षण, मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया। दिलचस्प बात यह है कि मंदिर में पर्दा ऊपर से नीचे तक फटने की यह कहानी या घटना, संभवतः, हालाँकि यह कई चीजों का सुझाव दे सकती है, संभवतः अब यह सुझाव देती है कि ईश्वर तक पहुँच और पापों की क्षमा अब मंदिर और इसकी बलिदान प्रणाली से बंधी नहीं है।

लेकिन अब, पापों की क्षमा और परमेश्वर और परमेश्वर के मंदिर की उपस्थिति तक पहुँच यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से आएगी। इसलिए, यह क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु है जो पापों की क्षमा को पूरा करेगी और परमेश्वर तक पहुँच लाएगी। कुछ ऐसा जो पहले मंदिर तक ही सीमित था।

मार्क अध्याय 10 और पद 45 में, एक पाठ जिसे हमने पहले देखा था, लेकिन मार्क अध्याय 10 पद 45, जिसके बारे में कुछ लोगों का सुझाव है कि यह मार्क का विषय है या मार्क और सुसमाचारों का प्रमुख चित्रण है। यह यीशु को एक सेवक के रूप में दर्शाता है। लेकिन मार्क 10:45 में फिर से, यीशु कहते हैं, मैं आया हूँ, या मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने के लिए नहीं आया है, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में अपना जीवन देने आया है।

इसलिए मार्क 10:45 में भी, यीशु खुद कहते हैं कि क्रूस पर उनकी मृत्यु लोगों की ओर से या उनके लिए होगी। यीशु की मृत्यु ऐसी होगी जो अपने लोगों को छुड़ाएगी, खरीदेगी या मुक्त करेगी। साथ ही, हमने देखा है कि, सबसे अधिक संभावना है कि, पीड़ा और सेवक की यह भाषा जो यीशु अपने लोगों की ओर से कई लोगों के लिए अपनी जान देने के संदर्भ में सेवा करने के लिए आया था, संभवतः यशायाह अध्याय 53 में सेवक गीतों से भी जुड़ी हुई है, जहाँ सेवक भी अपने लोगों के लिए अपना जीवन देता है।

यीशु द्वारा स्वयं को सेवक कहना संभवतः यशायाह के सेवक गीतों, विशेष रूप से 52 और 53 को याद दिलाता है। हम सुसमाचारों में भी स्पष्ट संकेत पाते हैं कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु ईश्वर के प्रेम और अपने लोगों के प्रति यीशु के प्रेम से प्रेरित है। सबसे प्रसिद्ध दो ग्रंथ चौथे सुसमाचार में जॉन के सुसमाचार में पाए जाते हैं।

सबसे प्रसिद्ध है यूहन्ना 3.16, क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपना पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए। इसलिए, परमेश्वर का प्रेम उसे अपने लोगों के लिए अपने पुत्र को फिर से मृत्यु में देने के लिए प्रेरित करता है। और इसलिए, परमेश्वर का प्रेम ही अपने पुत्र, यीशु मसीह को भेजने का प्रेरक कारक है।

लेकिन, यूहन्ना अध्याय 13 और पद 1 में, फसह के पर्व से ठीक पहले यीशु को पता था कि इस संसार को छोड़कर पिता के पास जाने का समय आ गया है। संसार में जो उसके अपने थे, उनसे प्रेम करते हुए, उसने अंत तक उनसे प्रेम किया। और इसलिए, अपने शिष्यों के प्रति यीशु का प्रेम क्रूस तक जाने के लिए प्राथमिक प्रेरक कारक है।

यीशु की मृत्यु के संबंध में सुसमाचारों में हमें जो एक और विषय मिलता है, वह है यीशु की स्वयं की पापहीनता और उनकी मासूमियत का विषय। इसलिए, यीशु को बार-बार चित्रित किया गया है, खासकर क्रूस पर चढ़ाए जाने के आख्यानों में। उदाहरण के लिए, यूहन्ना के अंतिम अध्यायों में यूहन्ना का विवरण पढ़ें।

यीशु की मृत्यु और उसके मुकदमे के बारे में यूहन्ना का अपना विवरण जिसमें यीशु की मृत्यु के लिए दूसरों को दोषी ठहराया गया है। लेकिन यीशु निर्दोष है। वह मृत्यु के योग्य नहीं है।

और ऐसा लगता है कि कुछ सुसमाचार लेखकों के लिए यीशु की मासूमियत, उनकी पापहीनता एक महत्वपूर्ण विषय है, जब वे मृत्यु में क्रूस पर चढ़ते हैं। इसलिए, फिर से, सुसमाचार, हालांकि वे यीशु की मृत्यु के धार्मिक महत्व को स्पष्ट रूप से विस्तार से नहीं बताते हैं, लेकिन इसके महत्व के स्पष्ट संकेत पहले से ही मौजूद हैं, खासकर इस संबंध में कि यीशु क्या करने आए थे और क्रूस पर यीशु की मृत्यु का महत्व, जो उनके लोगों के लिए मुक्ति लाने के लिए परमेश्वर की योजना का चरमोत्कर्ष था। एक अन्य उद्देश्य जिसे हम कम से कम उठा सकते हैं, वह है पुराने नियम के साथ संबंध।

बार-बार, यीशु की मृत्यु को पुराने नियम की पूर्ति के संबंध में चित्रित किया गया है। हम पहले ही सेवक भाषा देख चुके हैं, लेकिन संभवतः पुराने नियम के बलिदान, बलिदान प्रणाली और बलि मेमने आदि को भी यूहन्ना की परमेश्वर के मेमने की भाषा में देखा है, इसलिए संभवतः सुसमाचार लेखक यीशु की मृत्यु को अंततः पुराने नियम की बलिदान प्रणाली और पापों के लिए बलिदान की पूर्ति के रूप में समझते हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में आगे बढ़ते हुए, यीशु की मृत्यु का महत्व यीशु द्वारा किए गए कार्यों के संदर्भ में अधिक प्रमुख हो जाता है, विशेष रूप से कुछ भाषणों और उपदेशों में। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 3, श्लोक 18 और 19 में, पतरस बोलता है। प्रेरितों के काम के कुछ शुरुआती अध्यायों में, आप पतरस को बोलते या उपदेश देते हुए पाते हैं, और उनमें, हम यीशु की मृत्यु के संदर्भ पाते हैं।

हम यीशु के पुनरुत्थान के संदर्भ देखेंगे और देखेंगे कि यह कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन प्रेरितों के काम अध्याय 3, श्लोक 18 और 19 में, लेकिन इस तरह परमेश्वर ने वह सब पूरा किया जो उसने सभी भविष्यवक्ताओं के माध्यम से भविष्यवाणी की थी, कि उसका मसीहा दुख उठाएगा। तो पश्चात्ताप करो, और परमेश्वर की ओर फिरो, ताकि तुम्हारे पाप मिट जाएँ या मिट जाएँ, ताकि प्रभु की ओर से ताज़गी के दिन आएँ।

दो महत्वपूर्ण बातें। पहली बात यह है कि पतरस स्पष्ट रूप से यीशु मसीह की पीड़ा और मृत्यु को पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति से जोड़ता है। यह दिलचस्प है कि वह हमें यह नहीं बताता कि उसके मन में पुराने नियम के कौन से भविष्यवक्ता हैं या कौन से भविष्यवक्ता मसीहा की मृत्यु की भविष्यवाणी करते हैं।

शायद उसके मन में फिर से यशायाह अध्याय 52 और 53 से सेवक गीत हैं, लेकिन स्पष्ट रूप से, पतरस यीशु मसीह की मृत्यु को पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति के साथ जोड़ता है। इसे पद 18 में भी जोड़ा गया है, और इसे पद 19 में पापों के मिटाए जाने के साथ भी जोड़ा गया है। इसलिए, पश्चात्ताप करके, लोग यीशु मसीह की मृत्यु के आधार पर अपने पापों को मिटा सकते हैं या उनसे निपट सकते हैं या उन्हें मिटा सकते हैं, जिसकी भविष्यवाणी भविष्यवक्ताओं ने की थी।

इसलिए, पहले से ही प्रेरितों के काम अध्याय 3 में, हम पाते हैं कि पतरस यीशु मसीह की मृत्यु के महत्व और उसके द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख करता है। अध्याय 5 और पद 30, प्रेरितों के काम अध्याय 5 और पद 30, फिर से पतरस के बोलने का संदर्भ है, पतरस और अन्य प्रेरितों ने,

पद 29, उत्तर दिया, हमें मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाया, जिसे तुमने पेड़ पर या क्रूस पर लटकाकर मार डाला था।

यीशु को पेड़ पर या क्रूस पर लटकाने का यह संदर्भ, यीशु के कार्यों का सारांश देने वाली एक छोटी सी प्यारी कहावत से कहीं अधिक है जो हमारे गीतों और भजनों और इस तरह की चीजों में अपना रास्ता बनाती है। लेकिन यह पुराने नियम में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का एक स्पष्ट संदर्भ हो सकता है। जहाँ व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 और पद 23, व्यवस्थाविवरण 21 और पद 23 में, हम यह पढ़ते हैं, मैं पद 22 पढ़ूँगा : यदि किसी मृत्युदंड योग्य अपराध के दोषी को मृत्यु दण्ड दिया जाता है और उसका शरीर किसी खंभे पर खुला छोड़ दिया जाता है, तो आपको शरीर को रात भर खंभे या पेड़ पर लटका कर नहीं छोड़ना चाहिए, लेकिन इसे उसी दिन दफनाना सुनिश्चित करें, क्योंकि जो कोई भी पेड़ पर लटकाया जाता है वह ईश्वर के श्राप के अधीन होता है।

और इसलिए, पेड़ पर लटकने की यह भाषा, NIV में खंभे पर लटकने के रूप में अनुवादित होती है, लेकिन पेड़ पर लटकने का यह विचार, जिसे हम बाद में गलातियों में पॉल द्वारा उठाया गया देखेंगे, लेकिन यहाँ संभवतः यह सुझाव दिया गया है कि यीशु शापित है, पेड़ पर लटकने का मतलब है कि यीशु शापित था, जैसा कि व्यवस्थाविवरण 21 का संदर्भ है। दूसरे शब्दों में, यीशु को खुद पर शाप लेते हुए चित्रित किया गया है ताकि अब यीशु मसीह में उद्धार और क्षमा मिल सके क्योंकि वह वही है जिसे पेड़ पर लटकने के कारण शापित किया गया था। अर्थात्, उसने शाप को अपने ऊपर ले लिया।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में इसे और आगे नहीं बढ़ाया गया है। पौलुस इसे गलातियों में और आगे बढ़ाएगा, लेकिन सबसे अधिक संभावना है कि पतरस और अन्य प्रेरितों द्वारा दिया गया यह कथन व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 और पद 23 में पेड़ पर लटके हुए व्यक्ति के श्राप की ओर इशारा करता है। प्रेरितों के काम अध्याय 20 और पद 28, बस एक और उदाहरण देने के लिए, और ऐसे कई अन्य उदाहरण हैं जिन्हें हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में ही इंगित कर सकते हैं, लेकिन प्रेरितों के काम अध्याय 20 और पद 28, पद 27, क्योंकि मैंने परमेश्वर की पूरी इच्छा तुम्हें बताने में संकोच नहीं किया।

अपने ऊपर और उस पूरे झुंड पर नज़र रखो जिसका अध्यक्ष पवित्र आत्मा ने तुम्हें नियुक्त किया है। परमेश्वर की कलीसिया के चरवाहे बनो, जिसे उसने अपने लहू से खरीदा है। अब, यह दिलचस्प है, हालाँकि यहाँ कुछ व्याकरण संबंधी मुद्दे हैं।

दिलचस्प बात यह है कि ऐसा लगता है कि संदर्भ परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को अपने लहू से खरीदने का है। हालाँकि, आप इसे स्पष्ट रूप से समझते हैं कि संदर्भ मसीह की मृत्यु का है, जो अब अपने लोगों को, चर्च को सुरक्षित या प्राप्त करता है, और अब उन्हें उद्धार लाता है। इसलिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई अन्य ग्रंथ हैं जिन्हें हम देख सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हमने इस बात को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त उदाहरण देखे हैं कि मसीह की मृत्यु पुराने नियम की पूर्ति के रूप में प्रारंभिक चर्च की समझ में क्या भूमिका निभाती है, पापों को मिटाने के

रूप में, मसीह द्वारा अपने ऊपर अभिशाप लेने और अपने लिए खरीदने, अपने लोगों, चर्च को अपने लहू से प्राप्त करने के रूप में।

रक्त एक तरह का पर्यायवाची शब्द है, अर्थात्, एक भाग जो संपूर्ण को संदर्भित करता है, मसीह की मृत्यु के लिए, या मृत्यु के लिए। अब, मैं जो करना चाहता हूँ वह नए नियम के बाकी हिस्सों पर आगे बढ़ना है, और जैसा कि मैंने कहा, हम नए नियम के बाकी हिस्सों को प्रामाणिक रूप से नहीं देखेंगे, बल्कि इसके बजाय, हम नए नियम के बाकी हिस्सों, पॉल के पत्रों, अन्य नए नियमों, जिसमें रहस्योद्घाटन शामिल है, को मुट्टी भर प्रमुख विषयों या उद्देश्यों के संदर्भ में संदर्भित करेंगे, जो मुझे लगता है कि जोर देने योग्य हैं। अब, एक बार फिर, मसीह की मृत्यु के इतने सारे संदर्भ हैं कि उन सभी को संश्लेषित करने और पूरे नए नियम और उनके महत्व में उनका पता लगाने की कोशिश करना भारी पड़ सकता है।

इसलिए, मैं निस्संदेह कई अंशों को छोड़ दूंगा, या मैं उन सभी विषयों पर बात नहीं करूंगा जिन पर जोर दिया जा सकता है, लेकिन मैंने उन लोगों को चुना है जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण और सार्थक हैं और जिनका अन्वेषण किया जाना चाहिए। इसलिए, मैं मुख्य रूप से पॉल के पत्रों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा हूँ, लेकिन नए नियम में अन्य जगहों पर भी क्योंकि यहीं से यीशु, यीशु की मृत्यु का धार्मिक रूप से महत्व, उजागर होना शुरू होता है। और यहीं से हम यीशु की मृत्यु के संबंध में वास्तव में क्या हुआ, इसकी लंबी कहानियों के विपरीत, यीशु की मृत्यु के महत्व को उजागर करने वाले कथनों को खोजना शुरू करते हैं और यीशु क्या हासिल करने आए थे।

तो, पहला विषय या मूल भाव जिस पर मैं जोर देना चाहता हूँ, वह है यीशु की मृत्यु जो पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की पूर्ति है। हम इसे पहले ही सुसमाचार और प्रेरितों के काम में देख चुके हैं, लेकिन हम इसे नए नियम के बाकी हिस्सों में भी कई बार देखते हैं। और, एक बार फिर, संदर्भ इतने ज़्यादा हैं कि उन सभी का सर्वेक्षण करना संभव नहीं है, इसलिए मैं उनमें से कुछ पर ही बात करना चाहता हूँ।

लेकिन, बार-बार, क्रूस पर यीशु की मृत्यु को पुराने नियम के शास्त्र की पूर्ति के रूप में देखा जाता है, हालाँकि नए नियम के लेखक हमेशा हमें यह नहीं बताते कि उनके अनुसार पुराने नियम के शास्त्र की कौन सी बात पूरी हो रही है। हम पहले ही देख चुके हैं कि यशायाह अध्याय 53 एक सेवक के चरित्र का सबसे स्पष्ट संकेत है जो अपने लोगों के लिए और अपने लोगों की ओर से मरता है, पीड़ित होता है और मरता है। और वह पाठ नए नियम के लेखकों के कई उदाहरणों के आधार पर हो सकता है जो यीशु की मृत्यु को पुराने नियम की पूर्ति के रूप में इंगित करते हैं।

इनमें से एक और स्पष्ट उदाहरण जो हम पहले ही देख चुके हैं, वह है प्रेरितों के काम अध्याय 3 और पद 18, जहाँ लेखक हमें बताता है कि यीशु ने भविष्यवक्ताओं द्वारा बताई गई बातों के अनुसार दुख उठाया और मरा। हम अध्याय 15 में पुनरुत्थान के बारे में पौलुस के विवरण में कुछ ऐसा ही पाते हैं, जहाँ पुनरुत्थान के बारे में उसका लंबा वर्णन है, जहाँ वह केवल मसीह के पुनरुत्थान से नहीं निपटता है, बल्कि अधिक सामान्य रूप से, वह सामान्य रूप से परमेश्वर के लोगों के पुनरुत्थान से निपट रहा है। हम स्पष्ट रूप से इस पाठ को कुछ अन्य विषयों के संबंध में कुछ और विस्तार से देखेंगे।

लेकिन शुरुआत में ही, पहले तीन पदों में, पौलुस सुसमाचार के महत्व को उजागर करना शुरू कर देता है। वह कहता है कि यह सुसमाचार जो मैंने तुम्हें सुनाया, जिसे तुमने ग्रहण किया, और जिस पर तुम स्थिर हो। इस सुसमाचार से तुम बच जाते हो यदि तुम उस वचन को दृढ़ता से थामे रहो जो मैंने तुम्हें सुनाया; अन्यथा, तुम व्यर्थ ही विश्वास करोगे।

और यहाँ सुसमाचार है। वह कहता है, " जो मुझे मिला, वही मैंने तुम्हें दिया।" यह एक तरह की तकनीकी भाषा है जिसमें परंपरा प्राप्त करना, शिक्षा देना और फिर उसे सावधानीपूर्वक दूसरों तक पहुँचाना शामिल है।

और यहाँ यह है कि मसीह हमारे पापों के लिए शास्त्र के अनुसार मरा। शास्त्र के अनुसार उसे दफनाया गया और तीसरे दिन जी उठाया गया। और यह मसीह के हमारे पापों के लिए मरने का एक दिलचस्प संदर्भ है।

तो ध्यान दें कि यह सिर्फ मसीह के मरने का बयान नहीं है। बल्कि मसीह की मृत्यु को लोगों के पापों के लिए, लोगों के लाभ के लिए समझा जाता है। हमारे पापों के लिए मरना शास्त्रों के अनुसार है।

फिर से, पौलुस हमें स्पष्ट रूप से नहीं बताता कि उसके मन में कौन से शास्त्र हैं। लेकिन पौलुस आश्वस्त है कि शास्त्र स्वयं मसीह की मृत्यु की भविष्यवाणी करते हैं। फिर से, शायद यशायाह अध्याय 52 और 53, सेवक गीत, कुछ ऐसे शास्त्र हैं जो पौलुस के मन में हैं जब वह यीशु की मृत्यु के बारे में सोचता है जो पुराने नियम के शास्त्र को पूरा करती है।

यह भी दिलचस्प है कि मसीह की मृत्यु के बारे में कुछ विशिष्ट विवरण भी शास्त्र की पूर्ति के रूप में देखे जाते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि आप सुसमाचारों पर वापस जाते हैं, और फिर से, मैं विशेष रूप से पॉलीन और अन्य नए नियम के साहित्य का उल्लेख नहीं करने जा रहा हूँ। कभी-कभी मैं यीशु की मृत्यु के संदर्भ में सुसमाचार ग्रंथों पर वापस जाता हूँ।

लेकिन यूहन्ना अध्याय 19 और आयत 36 में, यूहन्ना के पुराने नियम के विवरण में, या यीशु की मृत्यु के बारे में। ये बातें इसलिए हुईं कि शास्त्र... दरअसल, मुझे वापस आना चाहिए। जिस व्यक्ति ने इसे देखा, उसने गवाही दी, और उसकी गवाही सच थी।

वह जानता है कि वह सच बोलता है। वह गवाही देता है ताकि तुम भी विश्वास करो। दरअसल, मुझे और भी पीछे जाना है, आयत 33।

लेकिन जब वे यीशु के पास आए और पाया कि वह पहले ही मर चुका था, तो उन्होंने उसके पैर नहीं तोड़े। यह रोमन क्रूस पर चढ़ाने में आम बात रही होगी ताकि पीड़ित अब खुद को संभाल न सके, और वे जल्दी से दम तोड़ दें और मर जाएँ। लेकिन उन्होंने पाया कि यीशु पहले ही मर चुका था, इसलिए उन्होंने उसके पैर नहीं तोड़े।

और फिर श्लोक 36 आगे कहता है, ये बातें हुईं। श्लोक 35 में इस संदर्भ के बाद जो इसे देखता है और इसकी गवाही देता है, लेखक फिर कहता है, ये बातें इसलिए हुईं ताकि शास्त्र की बातें पूरी हों। और फिर वह जकर्याह से उद्धरण देता है, मुझे खेद है, वह निर्गमन अध्याय 12, श्लोक 46 से उद्धरण देता है।

उसकी एक भी हड्डी नहीं तोड़ी जाएगी। और फिर, इस बिंदु पर मेरा उद्देश्य पीछे जाकर निर्गमन के पाठ को बहुत विस्तार से खोलना नहीं है। लेकिन अगर आप पीछे जाकर निर्गमन अध्याय 12 और श्लोक 46 को पढ़ें।

निर्गमन 12, श्लोक 46 फसह के संदर्भ में है और फसह मनाते समय परमेश्वर लोगों को जो निर्देश देता है, जो उन्हें मिस्र से बाहर ले जाता है। इसलिए एक तरह के फुटनोट के रूप में, कोई यह कह सकता है कि यीशु की मृत्यु को एक नए निर्गमन के संदर्भ में समझा जाता है। अपने लोगों को छुड़ाने और उन्हें एक नए निर्गमन में बाहर लाने के लिए।

लेकिन अध्याय 12 और पद 36, पद 46 में, फसह के लिए निर्देश देते हुए, यीशु कहते हैं, वापस जाएं और पद 43 से शुरू करें, प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, फसह के भोजन के लिए ये नियम हैं। कोई भी विदेशी इसे नहीं खा सकता। कोई भी दास जिसे तुम लाए हो, वह खतना करवाने के बाद इसे खा सकता है, लेकिन कोई अस्थायी निवासी या किराए पर काम करने वाला मजदूर इसे नहीं खा सकता।

इसे अवश्य खाया जाना चाहिए। अर्थात्, फसह का मेमना घर के अंदर ही खाया जाना चाहिए; घर के बाहर मांस न ले जाएँ, और न ही कोई हड्डी तोड़ें। इस्राएल के पूरे समुदाय को इसे मनाना चाहिए। इसलिए अब यीशु की मृत्यु स्पष्ट रूप से इस सरल विवरण में देखी जा सकती है कि उन्होंने यीशु के पैर नहीं तोड़े।

लेखक को पूर्णता मिलती है, शायद प्रतीकात्मक रूप से, क्योंकि यीशु अब सच्चा फसह मेमना है जो लोगों के लिए उद्धार और मुक्ति और एक नया पलायन लाता है, इसलिए यीशु की हड्डियाँ भी नहीं टूटी हैं। इसलिए, पलायन वास्तव में मसीह की भविष्यवाणी नहीं है, लेकिन एक प्रतीकात्मक संबंध है। मुझे ऐसा लगता है, तब यीशु सच्चे फसह मेमने के रूप में है जिसे अब बलिदान किया जा रहा है। इसलिए, यूहन्ना भी स्पष्ट रूप से फसह मेमने के रूप में यीशु की मृत्यु के महत्व को उजागर करता है और इंगित करता है।

1 कुरिन्थियों 5 पद 7 से हम पहले ही एक पाठ देख चुके हैं, जो इसका समर्थन करता है, जहाँ पौलुस स्पष्ट रूप से यीशु मसीह को फसह के मेमने के रूप में संदर्भित करता है। इसलिए, पद 7 में, यह 1 कुरिन्थियों 5 है और पद 7, पुराने खमीर को निकाल दें ताकि आप एक नए अखमीरी बैच बन सकें, जैसा कि आप वास्तव में हैं, क्योंकि मसीह हमारे फसह के मेमने की बलि दी गई है। तो बलिदान की उस भाषा पर ध्यान दें।

यीशु की मृत्यु को लोगों के पापों के लिए बलिदान के रूप में देखा जाता है। यीशु मसीह की मृत्यु को फसह के मेमने की पूर्ति में बलिदान के रूप में देखा जाता है जिसे मूसा और बाद की पीढ़ियों को चढ़ाने का निर्देश दिया गया था। हमने पहले ही यीशु की मृत्यु को एक पीड़ित सेवक की मृत्यु

के रूप में देखा है। शायद फिर से, मरकुस 10:45 यीशु सेवा करवाने के लिए नहीं आया था, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए अपने जीवन को छुड़ौती के रूप में देने के लिए आया था, जो यशायाह अध्याय 53 और सेवक गीत, यशायाह में सेवक भाषा को प्रतिबिंबित कर सकता है।

हमें यीशु की मृत्यु के पापों के लिए बलिदान होने के अन्य उदाहरण भी मिलते हैं। इफिसियों अध्याय 5 और पद 2 में पौलुस कहता है कि इसलिए प्यारे बच्चों की तरह परमेश्वर के उदाहरण का अनुसरण करो और प्रेम के मार्ग पर चलो, जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया और परमेश्वर के लिए एक सुगंधित भेंट और बलिदान के रूप में ताकि इफिसियों 5:2 और अन्य जगहों पर बलिदान की भाषा, फिर से मैं केवल उदाहरणों का उपयोग कर रहा हूँ हम इसके उदाहरणों को बढ़ा सकते हैं, लेकिन बलिदान के रूप में यीशु मसीह की मृत्यु शायद पुराने नियम के बलिदान की कल्पना को फिर से दर्शाती है। इसलिए, यीशु की मृत्यु पुराने नियम के बलिदानों की पूर्ति है।

यीशु की मृत्यु अब परमेश्वर के लिए उसके लोगों के लिए एक बलिदान है। यीशु द्वारा हमारे लिए खुद को समर्पित करने की इस भाषा पर फिर से ध्यान दें। हम एक और महत्वपूर्ण विषय को देखना शुरू करते हैं, और वह है लोगों की मृत्यु के बदले में यीशु की मृत्यु।

हम इसके बारे में थोड़ी देर बाद बात करेंगे। इब्रानियों की पुस्तक में भी हमें इसके स्पष्ट संदर्भ मिलते हैं। इब्रानियों में यीशु मसीह की मृत्यु और यीशु की मृत्यु द्वारा पुराने नियम की बलिदान प्रणाली को पूरा करने के बहुत सारे संदर्भ हैं।

पुराने नियम की व्यवस्था में दिए जाने वाले असंख्य बलिदानों और अब यीशु द्वारा स्वयं दिए जाने वाले एक बार के अंतिम बलिदान के बीच स्पष्ट तुलना, जो पाप से निपटता है और उसका ख्याल रखता है, अंततः वह पूरा करता है जो पुरानी वाचा की व्यवस्था नहीं कर सकती थी। बहुत विस्तार में जाए बिना, मुझे नहीं लगता कि लेखक यह कह रहा है कि पुरानी वाचा की व्यवस्था ने पाप के लिए कुछ नहीं किया। उसने किया।

लेकिन पुरानी वाचा की व्यवस्था अंततः पाप को दूर नहीं कर सकती थी और उपासक को शुद्ध नहीं कर सकती थी ताकि उपासक परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सके। यह केवल एक अंतिम बलिदान की आशा और प्रतीक्षा करने के लिए काम करता था जो इसे पूरा करेगा, और इब्रानियों के लेखक को विश्वास है कि क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु ऐसा करती है। इब्रानियों के लेखक को विश्वास है कि यीशु मसीह की मृत्यु भी प्रायश्चित के दिन की पूर्ति है।

उदाहरण के लिए, अध्याय 9, श्लोक 11-14 में, जब मसीह उन अच्छी चीजों के महायाजक के रूप में आया जो पहले से ही यहाँ हैं, तो वह उस बड़े और अधिक परिपूर्ण तम्बू से होकर गया जो मानव हाथों से नहीं बनाया गया है, यानी यह इस सृष्टि का हिस्सा नहीं है। उसने बकरियों और बछड़ों के खून के माध्यम से प्रवेश नहीं किया, जो पुराने नियम के तहत बलिदान था जो किसी की परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने और पाप से निपटने की अनुमति देता था, लेकिन उसने

अपने स्वयं के खून से एक बार के लिए सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश किया, इस प्रकार शाश्वत मोचन प्राप्त किया। बकरियों और बैलों का खून और बछिया की राख उन लोगों पर छिड़की जाती है जो औपचारिक रूप से अशुद्ध हैं ताकि वे बाहरी रूप से साफ हो जाएं।

तो फिर मसीह का लहू, जिसने सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को परमेश्वर के सामने बेदाग चढ़ाया, इस पुराने नियम की भाषा पर ध्यान दें, एक बेदाग मेमना, एक बेदाग पशु, बेदाग बलिदान, यह हमारी चेतना को मृत्यु की ओर ले जाने वाले कार्यों से कितना अधिक शुद्ध करेगा ताकि हम जीवित परमेश्वर की सेवा कर सकें। इब्रानियों अध्याय 9 के श्लोक 25 और 26 में, न ही वह बार-बार खुद को चढ़ाने के लिए स्वर्ग में प्रवेश किया, जिस तरह महायाजक हर साल अपने स्वयं के रक्त के साथ सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करता है। इसलिए, प्रायश्चित के दिन, महायाजक परम पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा और बलिदान से रक्त लगाएगा, लेकिन अब लेखक श्लोक 25 में कहता है कि यीशु मसीह ऐसा नहीं करता है।

इसके बजाय, श्लोक 26 में, अन्यथा मसीह को दुनिया के निर्माण के बाद से कई बार पीड़ा सहनी पड़ती, लेकिन वह युगों के अंत में एक बार और हमेशा के लिए प्रकट हुआ ताकि खुद के बलिदान से पाप को दूर कर सके। इसलिए, इसे पढ़ने के बाद, उम्मीद है कि आपने सभी बलिदान संबंधी भाषा, पुराने नियम की सभी भाषा को समझ लिया होगा, क्योंकि लेखक यही कर रहा है। लेखक फिर से प्रदर्शित कर रहा है कि यीशु की मृत्यु प्रायश्चित के दिन की अंतिम पूर्ति है।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, इब्रानियों में, बलिदान, पुरोहिताई, मंदिर और निवासस्थान, सभी एक साथ चलते हैं। पुरानी वाचा, वे सभी आपस में जुड़ी हुई हैं, और आप एक को बदलते हैं, तो आप बाकी सभी को बदल देते हैं। इसलिए अब यीशु मसीह प्रायश्चित के दिन की पूर्ति में लोगों के पापों के लिए खुद को बलिदान के रूप में पेश करता है।

इसलिए, पापों की क्षमा और शुद्धि अब उसमें पाई जा सकती है। कुछ ऐसा जिसके बारे में पुराने नियम में केवल अस्थायी रूप से बात की गई थी क्योंकि यह किसी महान व्यक्ति की ओर इशारा कर रहा था, और वह है पाप से निपटने के लिए यीशु मसीह का आना, जो प्रायश्चित के दिन में इरादा था उसे पूरा करना। और इसके अलावा, हम पहले ही पिछले व्याख्यान में उल्लेख कर चुके हैं कि यीशु मसीह की मृत्यु यिर्मयाह अध्याय 31 से नई वाचा के वादे का भी उद्घाटन करती है।

इसलिए, ऐसे अन्य ग्रंथ हैं जिनका हम संदर्भ ले सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे यह प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त हैं कि बार-बार यीशु की मृत्यु को पुराने नियम की पूर्ति के रूप में देखा जाता है। क्रूस पर यीशु की मृत्यु पुराने नियम की बलिदान प्रणाली की पूर्ति है, बिना किसी विशिष्ट ग्रंथों को उद्धृत किए या विशिष्ट ग्रंथों की ओर इशारा किए। मसीहा की पीड़ा और मृत्यु को अक्सर पुराने नियम के ग्रंथों की पूर्ति के रूप में भी देखा जाता है।

तो, एक बार फिर, क्रूस पर यीशु की मृत्यु पाप से निर्णायक रूप से निपटने के परमेश्वर के इरादे की पूर्ति से कम नहीं है। साथ ही, यह भी ध्यान देने योग्य है कि अब तक हमने जो कुछ भी कहा

है, वह पाप की उपस्थिति को मानता है जिससे निपटना होगा। यानी, यह उत्पत्ति अध्याय 3 को मानता है। यह मानता है कि मानवता पाप में डूबी हुई है।

यह मानता है कि मानवता पाप से प्रभावित है, पाप की शक्ति के अधीन है, जिससे उन्हें मुक्ति की आवश्यकता है और जिससे उन्हें बचाया जाना चाहिए। फिर से, मत्ती 1:21 में, यीशु अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए आया है। इसलिए, यह सारी चर्चा मानवीय पापपूर्णता, मानवीय विद्रोह, सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर से मानवीय अलगाव की स्थिति और समस्या को मानती है, कि मानवता पाप की शक्ति, पाप के प्रभाव और प्रभाव के अधीन है, और उसे इससे मुक्ति और इससे बचाए जाने और छुटकारा पाने की आवश्यकता है।

और अब क्रूस पर मसीह की मृत्यु को इसके साधन के रूप में चित्रित किया गया है। तो, पहला विषय या पहला उद्देश्य, यीशु की मृत्यु, पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की पूर्ति है। देखने के लिए दूसरा उद्देश्य यीशु की मृत्यु है, जिसे छुड़ौती के रूप में चित्रित किया गया है।

अर्थात्, यीशु की मृत्यु को लोगों को मुक्त करने के लिए चुकाई गई कीमत के रूप में चित्रित किया गया है। अब, जब हम उद्धार के नए नियम के विषय के बारे में बात करेंगे, तो हम इस विषय को फिर से उठाएंगे, विशेष रूप से छुटकारे के संबंध में। लेकिन यहाँ इसका परिचय देना महत्वपूर्ण है क्योंकि बार-बार, यीशु की मृत्यु को लोगों को छुड़ाने या मुक्त करने या उन्हें स्वतंत्र करने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

यीशु की मृत्यु एक छुड़ौती है। यानी, यह वह कीमत है जो लोगों को मुक्त करने के लिए चुकाई जाती है। हमने इसे पहले ही एक पाठ में पाया है जिसे हमने कई मौकों पर उद्धृत किया है और आगे भी करते रहेंगे, और वह है मार्क 10, श्लोक 45, जहाँ यीशु कहते हैं, मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने नहीं आया, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में अपना जीवन देने आया है।

1 पतरस 1, पद 18. पतरस कहता है, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, कि वे निकम्मे चालचलन से अपने बापदादों तक पहुँचें। पद 19, परन्तु निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोह के द्वारा हुआ।

तो, फिर से, पुराने नियम के संदर्भ पर ध्यान दें। यीशु मसीह एक बेदाग मेमना है, फसह का मेमना। लेकिन यह मसीह के लहू के ज़रिए था कि लोगों को छुड़ाया गया या खरीदा गया।

उन्हें छुड़ाया गया है। हम इसी तरह की भाषा बाद में नए नियम में प्रकाशितवाक्य में पाते हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 और पद 5। परिचयात्मक अभिवादन में, पद 5, यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले, जो विश्वासयोग्य गवाह है, और मरे हुए में से जी उठनेवालों में से ज्येष्ठ है, और पृथ्वी के राजाओं का शासक है, जो हमसे प्रेम करता है और जिसने अपने लहू से हमें हमारे पापों से छुड़ाया है।

फिर से, खून मौत का पर्याय है, यीशु की मौत के लिए। उसने अपने खून से हमें हमारे पापों से मुक्त किया। तो, फिर से फिरौती या मोचन या हमें मुक्त करने की भाषा पर ध्यान दें।

परमेश्वर अपने लोगों को मुक्त कर रहा है, और जो कीमत चुकाई गई वह यीशु मसीह का खून या मसीह की मृत्यु है। हम अध्याय 5 और श्लोक 9 में भी यही बात देखते हैं। एक भजन मेमने द्वारा की गई उपलब्धियों के जश्र में गाया जाता है। और फिर, अध्याय 5 एक वध किए गए मेमने, एक मारे गए मेमने की कल्पना के कारण दिलचस्प है, जो एक बार फिर पुराने नियम की फसह के मेमने की कल्पना और भाषा को याद दिलाता है, वह बलि का मेमना जो अब लोगों के पापों के लिए लोगों की ओर से मारा या वध किया जाता है।

यह अध्याय 1 और पद 5, साथ ही अध्याय 5 और पद 9 में स्पष्ट है। अब, यहाँ मेमने द्वारा गाया गया एक गीत है। तुम पुस्तक लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य हो। यह पुस्तक संभवतः परमेश्वर की योजना का प्रतीक है जो अपने लोगों को न्याय और उद्धार दोनों प्रदान करती है।

इसलिए, अविश्वासी संसार पर न्याय, लेकिन उसके लोगों के लिए उद्धार और छुटकारा। आप उस पुस्तक को लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य हैं, यानी उसकी विषय-वस्तु को लागू करने के योग्य हैं, क्योंकि आप मारे गए थे, और अपने खून से, आपने हर जनजाति और भाषा और लोगों और राष्ट्रों से परमेश्वर के लिए लोगों को खरीदा। इसलिए, यीशु की मृत्यु को छुड़ौती के रूप में देखा जाता है, एक कीमत के रूप में जो उसके लोगों को छुड़ाने या खरीदने के लिए चुकाई जाती है।

लोगों को यीशु मसीह के लहू से खरीदा गया है या खरीदा गया है। और फिर से, हम उद्धार की अपनी चर्चा के संदर्भ में छुटकारे की इस धारणा पर लौटेंगे। लेकिन एक महत्वपूर्ण बात यह है कि नया नियम इस रूपक को बहुत दूर तक आगे बढ़ाने में रुचि नहीं रखता है।

यानी, अगर हम पूछना शुरू करें, तो यह कीमत किसको चुकाई गई? परमेश्वर के लोगों को मुक्त करने, फिरौती देने और खरीदने के लिए किसे भुगतान किया जा रहा है? नया नियम यह नहीं कहता है, और शायद यह ज़रूरी नहीं है और शायद यह पूछना अनुचित भी है कि क्या यह परमेश्वर को चुकाया जा रहा है? मुझे यकीन नहीं है कि यह बहुत ज़्यादा समझ में आता है क्योंकि परमेश्वर उन्हें बंदी नहीं बना रहा है। क्या यह कीमत उन्हें खरीदने के लिए शैतान को चुकाई गई है? यह निश्चित रूप से अनुचित लगता है, और आप इसे नए नियम में कहीं भी नहीं पा सकते हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि यह पूछना अनावश्यक है कि यीशु किसको कीमत चुकाता है या किसको कीमत चुकाई जाती है।

जो महत्वपूर्ण है वह केवल खरीद या फिरौती का रूपक है, जो लोगों को मुक्त करने के लिए कीमत चुकाना है। हमें इसे उससे आगे बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। मुझे लगता है कि पहचानने वाली दूसरी बात यह है कि हमें फिरौती और खरीद की इस भाषा को समझना चाहिए, संभवतः पलायन के संदर्भ में भी।

इसलिए, यीशु मसीह की मृत्यु पुराने नियम की पूर्ति है। यीशु मसीह की मृत्यु को फिरौती या लोगों को मुक्त करने और छुड़ाने के लिए भुगतान के रूप में भी देखा जाना चाहिए। उन्हें यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा मसीह के लहू से खरीदा या खरीदा गया है।

यीशु की मृत्यु से संबंधित एक और महत्वपूर्ण विषय यह प्रतीत होता है कि यीशु की मृत्यु को अंतिम समय के क्लेश के उद्घाटन के रूप में भी देखा जा सकता है। यह परमेश्वर के लोगों की पीड़ा और उत्पीड़न का अंतिम समय का क्लेश है, जिसके बारे में हम विशेष रूप से दानिय्येल की पुस्तक में पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए। यीशु की मृत्यु को अब अंतिम समय के क्लेश के उद्घाटन के रूप में देखा जा सकता है, विशेष रूप से जैसा कि दानिय्येल की पुस्तक में भविष्यवाणी की गई है, जहाँ परमेश्वर के लोग पीड़ित होंगे और यहाँ तक कि उन्हें मार भी दिया जाएगा।

अब, मसीह की पीड़ा और उनकी मृत्यु उस अंतिम समय के क्लेश का उद्घाटन और आरंभ बिंदु है। ग्रेग बील ने अपने नए नियम के धर्मशास्त्र में इस पर विस्तार से तर्क दिया है, जहाँ वे सुसमाचारों और अन्य स्थानों में यीशु की पीड़ा और यीशु की मृत्यु के संदर्भों को इंगित करते हैं, जो कि दानिय्येल की पुस्तक में भविष्यवाणी की गई परमेश्वर के लोगों के अंतिम समय के उत्पीड़न, अंतिम समय के परीक्षणों और अंतिम समय के क्लेशों की शुरुआत है। मैं अभी दानिय्येल में वापस नहीं जाऊँगा और विशिष्ट पाठ नहीं पढ़ूँगा, लेकिन अध्याय 7, अध्याय 12 और कुछ अन्य स्थानों में परमेश्वर के लोगों के उत्पीड़न, यहाँ तक कि उन्हें मौत के घाट उतारने के संदर्भ हैं।

हम इसे विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाते हैं। प्रकाशितवाक्य में, हम इस तथ्य के बारे में पढ़ते हैं कि क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु वास्तव में एक मॉडल या एक प्रतिरूप बन जाती है कि कैसे उसके लोग भी इस पर विजय प्राप्त करेंगे। जिस तरह यीशु मसीह ने अपने दुख और मृत्यु पर विजय प्राप्त की, उसी तरह उसके लोग भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अपने दुख और अंततः अपनी मृत्यु के द्वारा विजय प्राप्त करते हैं।

इसलिए, परमेश्वर के लोगों की पीड़ा, यानी उनकी पीड़ा और मृत्यु, यीशु मसीह की पीड़ा और मृत्यु के साथ शुरू हुई और उसी के साथ शुरू हुई। मैं यह कहने में संकोच करूँगा कि यह यीशु की मृत्यु की एक प्रमुख विशेषता है, या यह मुख्य विषय या एक प्रमुख विषय है जिसे कोई पाता है, लेकिन यह निश्चित रूप से वहाँ है। ग्रेग बील यह कहकर सारांशित करते हैं: यीशु ने मनुष्य के पुत्र के रूप में इस्राएल के संतों का प्रतिनिधित्व किया और उन्हें मूर्त रूप दिया, जो दानिय्येल 7 में वापस जाता है, और क्रूस पर उनकी मृत्यु एक महान अंत-समय परीक्षण की दानिय्येल की भविष्यवाणी की पूर्ति थी, जिसमें युगांतिक दुश्मन वफादार इस्राएलियों पर अत्याचार करेगा और उनमें से कई को मार देगा।

और अब यह यीशु के साथ हुआ है, बील तर्क देते हैं। यीशु की अपनी पीड़ा और परीक्षण और क्रूस पर उनकी मृत्यु, दानिय्येल के अंतिम समय के क्लेश की शुरुआत और पूर्ति है, जहाँ एक दुश्मन, एक शैतानी प्रकार का व्यक्ति, एक अत्याचारी व्यक्ति, आएगा और परमेश्वर के लोगों को सताएगा और उन्हें मौत के घाट उतार देगा। अब, यह यीशु के साथ उनकी मृत्यु के संदर्भ में हुआ है, खासकर जब आप पूरे सुसमाचार में पढ़ते हैं।

यीशु की मृत्यु को इस्राएल के निर्वासन के रूप में भी देखा जा सकता है। हमने परमेश्वर के लोगों और कुछ अन्य विषयों पर अपनी चर्चा के दौरान देखा है कि यीशु मसीह को इस्राएल के भाग्य या

इस्राएल के इतिहास को फिर से बताने के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसलिए, हमने यीशु मसीह को परमेश्वर के सच्चे लोगों के रूप में देखा, खासकर मैथ्यू के सुसमाचार में, उदाहरण के लिए, लेकिन ऐसे अन्य ग्रंथ भी हैं जो इस बात का संकेत देते हैं। मैथ्यू के सुसमाचार में, यीशु मसीह, इस्राएल राष्ट्र की तरह ही, मिस्र जाते हैं और मिस्र से बचाए जाते हैं।

हम मत्ती के अध्याय 4 में देखते हैं कि यीशु को आदम और हव्वा की तरह ही प्रलोभन का सामना करना पड़ा, लेकिन इस्राएल की तरह भी। यीशु 40 दिन और 40 रातों तक परीक्षा और प्रलोभन की अवधि से गुज़रता है। फिर भी, इस्राएल के विपरीत, जो असफल हो गया, यीशु ने परीक्षा पास कर ली।

इसलिए, हम यीशु को, एक अर्थ में, इस्राएल के इतिहास को मूर्त रूप देते हुए, उसका सार प्रस्तुत करते हुए या उसे दोहराते हुए देखते हैं। और शायद हमें यीशु की मृत्यु को इस्राएल के निर्वासन को अपने ऊपर लेने के रूप में भी देखना चाहिए। यह, एक अर्थ में, इस्राएल के निर्वासन का सार प्रस्तुत करना है।

उनकी पीड़ा और उनकी मृत्यु उनके लोगों, इस्राएल की ओर से अंतिम निर्वासन है, यीशु द्वारा स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति से निर्वासित होना। मेरे मन में जो मुख्य पाठ है वह मिल गया है, और एक बार फिर, हम मैथ्यू के सुसमाचार को देखेंगे। मैथ्यू अध्याय 27 में, मैथ्यू के यीशु की मृत्यु के विवरण में, अध्याय 27 और श्लोक 46 में, यह वास्तव में क्रूस पर यीशु की प्रसिद्ध बातों में से एक है।

लेकिन अध्याय 27 में, और आइए श्लोक 46 देखें, मैं 45 पढ़ूंगा। दोपहर से लेकर दोपहर तीन बजे तक, देश पर अंधकार छा गया। और कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या यह परमेश्वर की उपस्थिति के हटने, परमेश्वर की महिमा के हटने की तस्वीर नहीं है, जिससे अब अंधकार है।

कम से कम, यह न्याय का दृश्य है। परमेश्वर का अंधकार अब देश पर छा गया है। दोपहर के लगभग तीन बजे, यीशु ऊँची आवाज़ में पुकारते हैं, एल ओई, एलोई, लामा सबाकथानी, जिसका अर्थ है, मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तुमने मुझे क्यों त्याग दिया? इसलिए, यीशु की पीड़ा और विशेष रूप से अब क्रूस पर उनकी मृत्यु के साथ, यीशु अब परमेश्वर की उपस्थिति से बहिष्कृत और निर्वासित होकर इस्राएल की ओर से अंतिम निर्वासन का सामना करते हुए प्रतीत होते हैं।

कई टिप्पणीकारों और धर्मशास्त्रियों ने इस पाठ को पढ़ा और पाया कि यहाँ हमें धर्मशास्त्र की दृष्टि से सबसे दिलचस्प पाठ मिलता है जहाँ परमेश्वर पुत्र से मुँह मोड़ता हुआ प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि अब यीशु को पिता ने त्याग दिया है। पिता की उपस्थिति अब, एक अर्थ में, पुत्र से दूर हो गई है।

साथ ही, यीशु अभी भी स्वयं परमेश्वर हैं। मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई बदलाव आया है। फिर भी, किसी तरह, हम पाते हैं कि यीशु अपने लोगों, इस्राएल की खातिर अंतिम निर्वासन का सामना कर रहे हैं, अब उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर रखा गया है।

यीशु की मृत्यु को भी नए नियम में एक अन्य महत्वपूर्ण विषय के रूप में देखा जाता है। यीशु की मृत्यु को दुष्ट शक्तियों पर विजय के रूप में देखा जाता है। उदाहरण के लिए, कुलुस्सियों के अध्याय 2 और पद 15 में,

कुलुस्सियों के अध्याय 2 और आयत 15. धर्मशास्त्री अक्सर इसे यीशु की मृत्यु के बारे में क्राइस्टस विक्टर दृष्टिकोण कहते हैं। यानी, यीशु की मृत्यु मुख्य रूप से दुष्ट शक्तियों पर विजय थी।

इसने दुष्ट शक्तियों को वश में किया, उन पर विजय पाई, उन्हें परास्त किया। निश्चित रूप से, पूरे पवित्रशास्त्र में इसके कई संदर्भ हैं। यह प्रमुख विषय है या नहीं, या यीशु की मृत्यु के संबंध में मुख्य विषय है या नहीं, या यीशु की मृत्यु द्वारा किया गया मुख्य कार्य है या नहीं, यह एक और प्रश्न है।

लेकिन निश्चित रूप से, इस बात पर सवाल नहीं उठाया जा सकता कि यीशु की मृत्यु को अक्सर दुष्ट शक्तियों पर विजय पाने और उन्हें हराने के रूप में देखा जाता है। इसलिए, कुलुस्सियों अध्याय 2 और पद 15. मुझे वापस जाना चाहिए, और मैं पद 13 से शुरू करूँगा।

जब तुम अपने पापों और अपनी देह की खतनारहित दशा में मरे हुए थे, तो परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के साथ जिलाया, और तुम्हारे सब पापों को क्षमा किया। और हमारे ऊपर जो कानूनी दायित्व था, जो हमारे विरुद्ध था और हमें दोषी ठहराता था, उसे हटा दिया, और क्रूस पर जड़कर हटा दिया। और उसने अधिकारियों और प्रभुता को निरस्त करके क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार करते हुए उनका सार्वजनिक तमाशा बनाया।

इसलिए, क्रूस पर यीशु की मृत्यु को दुष्ट शक्तियों पर विजय के रूप में देखा जाता है। यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से, वह हमें दुष्ट शक्तियों से बचाता है। वह हमें दुष्ट शक्तियों से बचाता है।

वह उन पर विजय प्राप्त करता है और उन्हें हराता है। हम शायद इफिसियों के अध्याय 2 में भी ऐसी ही भाषा देखते हैं। और हमने आयत 11 से 22 को पढ़ने में काफी समय बिताया। लेकिन अगर आप पीछे जाएं और अध्याय 2 की पहली दस आयतें पढ़ें, तो हमें इस बात का संदर्भ मिलता है कि परमेश्वर यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से अपने लोगों के लिए क्या करता है।

और साथ ही, मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में उसके लोगों को उसके साथ एकजुट करके। लेकिन इससे पहले कि वह यह कहे, और यह प्रसिद्ध पाठ है, अनुग्रह से, आप विश्वास के माध्यम से बचाए गए हैं। और यह आपके द्वारा नहीं है। यह ईश्वर का उपहार है, कार्यों का नहीं, ताकि कोई घमंड न करे।

इसलिए, अनुग्रह से, आप बचाए गए हैं। यही वह है जिसे हम आमतौर पर इस अंश के साथ जोड़ते हैं। लेकिन इससे पहले कि पौलुस वहाँ पहुँचे, वह यह कहकर शुरू करता है, " तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, जिनमें तुम पहले जीते थे, जब तुम इस संसार के तरीकों और हवा के राज्य के शासक, यानी आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब उन लोगों में काम कर रहा है जो अवज्ञाकारी हैं।

हम सभी एक समय में उनके बीच रहते थे, शरीर की लालसाओं को संतुष्ट करते हुए। इसलिए, इफिसियों अध्याय 2 के पहले तीन छंदों में, पॉल यह चित्र प्रदान करता है, मुझे लगता है, ऐसे लोगों की जो अधिकार और दुष्ट शक्तियों के प्रभुत्व के अधीन हैं, जिनसे उन्हें अंततः यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा बचाया जाएगा। इसलिए, जैसा कि अध्याय 2 आगे बढ़ता है और सुझाव देता है, यह परमेश्वर के महान प्रेम के कारण था कि उसने हमें मसीह में जीवित किया और हमें स्वर्गीय क्षेत्रों में अपने साथ बीज बोया।

हालाँकि इस संदर्भ में मसीह की मृत्यु का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है, लेकिन इफिसियों के बाकी हिस्सों में निश्चित रूप से एक है। मुझे लगता है कि ये दो पाठ और अन्य, और शायद प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी, यह स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं, खासकर अध्याय 12 और 13 में, कि शैतान अंततः यीशु मसीह की मृत्यु से पराजित होता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में शैतान का स्वर्ग से निष्कासन, अंततः अध्याय 12 में, एक भजन या उसके ठीक बाद आने वाले छंदों में एक कथन द्वारा व्याख्या किया जाता है।

तो, अध्याय 12 में, शैतान को स्वर्ग से निकाल दिया गया है, और यह वही है जो यह कहता है। फिर मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी। तो, आवाज़ इसका अर्थ बताने जा रही है। यह कहता है, स्वर्ग में माइकल और ड्रैगन के बीच युद्ध छिड़ गया।

ड्रैगन की पहचान शैतान के रूप में की गई है। और शैतान को नीचे फेंक दिया गया है, और उसे और उसके स्वर्गदूतों को धरती पर फेंक दिया गया है, और फिर आवाज़ ने इसका अर्थ बताया। अब हमारे भाइयों और बहनों पर आरोप लगाने वाले के लिए परमेश्वर का उद्धार, शक्ति और राज्य और मसीह का अधिकार आ गया है।

वह दिन-रात हमारे परमेश्वर के सामने उन पर आरोप लगाता है, उसे नीचे गिरा दिया गया है। उन्होंने मेम्ने के लहू के द्वारा उस पर विजय प्राप्त की। तो, एक बार फिर, शैतान की हार, बुरी शक्तियों की हार, यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा होती है, या मसीह की मृत्यु द्वारा पूरी की जाने वाली चीजों में से एक है।

इसे समझने का एक महत्वपूर्ण तरीका यह है कि यह परमेश्वर के लोगों को दुष्ट शक्तियों से पराजित, विजय और बचाव प्रदान करता है। अगले सत्र में, हम मसीह की मृत्यु के महत्व और इससे क्या हासिल होता है, इस पर अपनी चर्चा समाप्त करेंगे और फिर उससे जुड़े आवश्यक सहसंबंध पर विचार करेंगे, जो कि मसीह का पुनरुत्थान है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 22, यीशु की मृत्यु, भाग 1 है।